ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

# आदिवासी परम्परा : दूधा–भाती

# Tribal Tradition

Paper Submission: 12/03/2021, Date of Acceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

**शैलकुमारी धुर्वे**
शोध छात्रा,
नेट यूजीसी, सेट
एम पी पी एस सी,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
छिंदवाडा, मध्य प्रदेश, भारत

**लक्ष्मीकान्त चंदेला**
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्वशासी
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
छिंदवाडा, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**

दीर्घकाल से अनेकानेक आदिवासी परंपराएं रही हैं । 'दूधा–भाती' भी इनमें से एक है। गीत–गारी, नृत्य– संगीत से सुसज्जित इस परंपरा में अन्यान्य समुदाय के सदस्य भी सम्मिलित होते हैं। दरअसल दूधा–भाती आत्मीयता का भाव है। इसलिए आदिवासी लोक में दूल्हा–दुल्हन को घर–घर बुलाकर दूध–भात खिलाया जाता है। यह भी सत्यं है कि आत्मीजयता के बुनावट की यह शाश्वत परंपरा है जो आदिवासियों में देखी जाती है। इन रस्मों रिवाजों के साथ गीत–गारी के माध्यम से वूध–पक्ष वर–पक्ष के प्रति अटूट रिश्ता व अपनत्व का बोध कराती है। भाव–बोध की ऐसी सुंदर अभिव्यक्ति आदिवासियों की कई आदिम परम्पपराओं में देखने को मिलती है।

अतएव दूधा–भाती आदिवासियों की श्रेष्ठ और सर्वप्रिय परंपरा में से एक मानी जाती है क्योंकि इसमें दो नए रिश्ते आपस में जुड़कर एक नवीन रिश्ते का, नए परिवार का और नए समाज का निर्माण करते हैं। इसमें उत्तम संस्कारों व चरित्रों की परिकल्पना की गई है। आदिवासी व लोक समाज में यह अमर व सर्वस्वीकृत परंपरा है।

There have been many tribal traditions for a long time. Shadudha-Bhatish is also one of them. Equipped with song and dance, dance and music, members of other communities also participate in this tradition. Actually, there is a sense of intimacy. Therefore, in tribal folk, the bride and groom are called from house to house and fed with milk and rice. It is also true that this is the eternal tradition of the texture of intimacy, which is seen in the tribals. Through song and singing with these rituals, the Wudh-Paksha makes a sense of unwavering relationship and affinity towards the groom-side. Such beautiful expressions of emotion are seen in many primitive traditions of the tribals.

Therefore, Dudha-Bhati is considered one of the best and most popular traditions of the tribals because in this two new relationships join together to form a new relationship, a new family and a new society. It envisages good values and character. This is an immortal and accepted tradition in tribal and folk society.

**मुख्य शब्द :** संबंध, मिठास, अपनत्व और परम्परा।
Relationship, Sweetness, Belonging and Tradition.

**प्रस्तावना**

आदिवासी समाज मानवीय भावनाओं और परिस्थितियों को परंपराओं के रूप में चित्रित करते हैं। इनकी अपनी जीवन पद्धति, संस्कार, परंपरा और मर्यादा होती है। जो विशिष्ट संस्कृति के सृजन में सहायक होती है। प्रकृति से उत्पन्न भौगोलिक परिस्थितियां, रीति–रिवाज, तीज–त्यौहार एवं सांस्कृतिक विरासत जो इन्हें परंपरा से मिली है, उसे सहेज कर रखना इष्टर धर्म होता है। हम यह देखते भी हैं कि लोक संस्कृति का प्रकृति से गहरा संबंध रहा है। प्रकृति का अनुकरण करती हुई परंपराएं उसी के अनुरूप अपना स्वरूप ग्रहण करती चलती हैं। प्रकृति के सानिध्य में विकसित होती आदिवासी परंपराएं सौंदर्यबोध और कल्याणकारी होती हैं। इसके विपरीत जो संस्कृति प्रकृति से दूर हटती जाती है वह नीरस होती चली जाती है। प्रकृति के वातावरण से प्रभावित होकर परंपराएं निखरती, संवरती और मंजती चली गई। आधुनिक काल में बाह्य संपर्क में आने के कारण आदिवासी परंपरायें परिवर्तित हुई है, किंतु इनकी पहचान और उसे प्रतिष्ठित करने का संघर्ष आज भी निरंतर जारी है। अपने रहन– सहन, खान–पान, धंधा–व्यवसाय, गीत–गारी और देवी–देवता, तंत्र–मंत्र में विश्वास के कारण आदिवासी सदैव आकर्षण का केंद्र रहे हैं।

**अध्ययन के उद्देश्य**

आदिवासियों की प्राचीन परम्पश्रा दूधा–भाती का महत् उद्देश्य है। इस परम्पारा से हम जान सकेंगे कि–

1. आदिवासी जीवन कितना सहज और प्राकतिक है।
2. जीवन के संबंध सूत्र बुनना एवं जानना।
3. कैसे संबंध सूत्रों को बुना जाता है।
4. जीवनपर्यन्त संबंधों में मिठास बनाए रखना।
5. दुआ–आशीष देना जिससे व्येक्ति–जीवन दीर्घायु प्राप्त करे।

'दूधा–भाती' परंपरा आदिवासियों की प्राचीन संस्कृति की परिचायक है। इसमें लोकोक्तियां, लोक कथाएं, गीत, कहानी तथा मिथक आदि शामिल होते हैं। दूध–भात खिलाने की इस परंपरा में अपनेपन के भाव का स्वतः ही सृजन होता है। सभ्यता के आरंभ से चली आ रही इस परंपरा का अपना विशिष्ट महत्व है। इसमें व्यक्ति को व्यक्ति से, परिवार को परिवार से, समाज को समाज से और मानव को मानव से जोड़ने की प्रतिबद्धता निहित होती है। इसलिए इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। व्यापक सामाजिक परिवेश में अपनी अलग छाप छोड़ती इस परंपरा का क्षेत्र विशाल और बहुआयामी है। आज भी आदिवासी लोक परंपरा के रूप में ख्याति प्राप्त कर यह सारे लोक जीवन में अपनी विशिष्ट पहचान लिए हुए विद्यमान है । दूधा–भाती आदिवासियों की श्रेष्ठ और सर्वप्रिय परंपरा में से एक मानी जाती है क्योंकि इसमें दो नए रिश्ते आपस में जुड़कर एक नवीन रिश्ते का, नए परिवार का और नए समाज का निर्माण करते हैं।

यह सहज जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि आखिर दूधा–भाती है क्या? आदिवासी संस्कृति का पठन–पाठन करते हैं तो ज्ञात होता है कि 'दूधा–भाती' 'दूध–भात' से मिलकर बना एक सामासिक शब्द है। इसमें द्वंद्व समास है। दूध–भात से आशय सिर्फ दूध–भात खिलाने से नहीं है, यह एक सार्वभौमिक व सर्व स्वीकृत परंपरा से है जिसे विवाह संस्का र के रूप में ग्रहण करते हैं। यह बहुत ही अनूठी रस्म है जिसमें वर–वधु को दूध–भात खिलाया जाता है तथा आशीर्वाद दिया जाता है कि जो मिठास दूध–भात में है ऐसी ही मिठास जीवन भर उनके दांपत्य जीवन में चलती रहे, की कामना की जाती है।

परम्पवरा के प्रादुर्भाव के समय लोगों के पास दूध और अन्न का भी पर्याप्त साधन था। उसी को बेहतर ढंग से अपने संस्कारों में सम्मिलित करते थे। अमृत का भाव आदिवासी संस्कृति में यह संकल्पना दूधा–भाती में प्रतिबिंबित होती है। आदिवासियों के खान–पान में शामिल कोदई, कुटकी, कंगनी, समा तथा डोढ़मा का भात अमरता का प्रतीक है। विवाह आदि अनुष्ठान–कार्यक्रमों में विशेष रूप से कोदई के भात का उपयोग किया जाता था। कोदई के भात और दूध को मिलाकर दूध–भात बनाया गया और इसे परम्परा के रूप में अपनी संस्कृति में सम्मिलित किया गया है। क्षेत्र विशेष के अनुसार अलग–अलग अवसर पर इस रस्म को विभिन्न प्रकार से किया जाता है। दूध–भात के स्थान पर गुड–पूरी, गुड–नारियल तथा बतासे व पापड़ खिलाने का रिवाज होता है। इस परंपरा का एक अन्य नाम श्मुंह जिवानाश भी है।

सचमुच आदिवासियों की यह दूधा–भाती की परम्पौरा अति प्राचीन है। हां, जब इस तरह की परम्पलरा देखने को मिलती है तो प्रश्नह व जिज्ञासा दोनों ही उत्पलन्नच होती है कि आदिवासियों में यह परंपरा क्यों और कैसे सम्मिलित हुई? उसका निर्वाह आदिवासी संस्कृति में कैसे हो रहा है? इस संस्कृति को इतना महत्व क्यों दिया गया है? इसमें जब हम चिंतन करते हैं तो ज्ञात होता है कि आदिवासी संस्कृति में दूधा–भाती दोनों कुलों के साथ–साथ उनकी परंपराएं भी एक–दूसरे को स्वी कार्य हो। इतना ही नहीं उन परंपराओं में, उन संस्कृतियों में और दोनों परिवार में, दोनों की नाते–रिश्तेदारी में ऐसे ही आजीवन दूध–भात सी मिठास बनी रहे, इस दृष्टि से दूधा–भाती सम्मिलित होती है। हम देखते हैं कि आदिवासी लोक में कोई भी रस्म होती है तो उनसे हमें जीवन की कोई–न–कोई महत् चीज प्राप्त होती है। इस तरह से वह हमारी संस्कृति बन जाती है और जब संस्कृति बनती है तो वह पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है। यह कारण है कि इसका इतिहास पुरातन है और इसलिए आदिवासियों की यह परंपरा आदिम मानी जाती है।

आत्मीयता का भाव लिए दूधा–भाती की यह परंपरा आदिवासी संस्कृति की श्रेष्ठता की सूत्रधार है। यह वैश्विक होते हुए भी लोक को अपना बनाने की एक शाश्वत परंपरा है। इसमें उत्तम संस्कारों व चरित्रों की परिकल्पना की गई है। आदिवासी व लोक समाज में यह अमर व सर्वस्वीकृत परंपरा है। आज के समय में गैर आदिवासी समाज दूध–भात की जगह बाजार में बने बनाए मिष्ठान को लाकर इस रस्म की अदायगी करते हैं लेकिन आदिवासी समाज आज भी अपने हाथों से मिष्ठान के रूप में दूध–भात बनाकर इस रश्म में सम्मिलित करते हैं। आदिवासी मान्यता के अनुसार श्दूधा–भातीश रस्म के प्रारंभ होने के साथ ही सवासा और सवासिन बनाने की प्रथा होती है। लोक मुख के अनुसार पारीसेरमी या पारमी–सेरमी के व्यक्ति को ही सावासा बनाया जाता है। सवासन मुख्यतरू भाभी को बनाया जाता है किन्तु उसकी अनुपस्थिति में बहन को भी बनाया जा सकता है। विवाह के दौरान यह रस्मऔ लगभग पांच या छह बार अलग–अलग अवसर पर की जाती है। गैर आदिवासी समाज में बदले स्वारूप में ही सही पर होती तो जरूर है।

प्रथम दृष्टजया यह यह परम्पउरा विवाह के लगभग एक सप्ताह पूर्व से ही लोक रीति–रिवाज के साथ आरंभ होती है। श्दूधा–भातीश परम्परा के लिए दूध–भात बनाने का कार्य सवासिन का होता है। प्रादुर्भाव काल में जब कोई भी साधन उपलब्ध नहीं थे, तब चौंडे–चकरे पत्तोंल में यथा– माहोल, पलाश, या सागौन के पत्ते में दूध–भात परोसकर तथा इन्हीं पत्तों से दोनाध्पानी पीने का पात्र बनाकर ले जाया जाता था। धीरे– धीरे विकसित हो रहा आदिवासी समाज यानि आज के समय में इस रश्म में माहोल के पत्तों की जगह कांसा या अन्य धातु से बने पात्रों का उपयोग किया जाने लगा है। घर के भीतर देवघर में चौकं पूरा जाता है । इसी चौंक में बैठा कर

श्दूधा–भातीश खिलाने की शुरुआत की जाती है। यहां महिलाओं द्वारा चौंक पुराई के गीत गाए जाते हैंदृ

चौंक पुराले बन्नो मखमल के कंचन कलश लिसाले,

आजा तुम्हारे बन्नो चरणों में आजी तिलक लगावे,चौंक पुराले.....

बाबुल तुम्हारे बन्नो चरणों में माता तिलक लगावे,चौंक पुराले.....

अथवा

मेरी सीता पराई हो गई राम ब्या ह रचे राजाराम।

जब मेरी सीता की लगन लिखत है, सीता पराई .....

जब मेरी सीता की चौंक पूरत, सीता पराई.....

आदिवासी संस्कृति में कोई भी रस्म बिना गीत, बिना गम्मत, बिना गाजे–बाजे के नहीं होती है। चाहे वह वैवाहिक कार्य हो, जन्म–उत्सव या मरण–मौत हो, हर जगह इनका विशेष महत्त्व होता है।

सबसे पहले वर या वधू की माता द्वारा दूध–भात खिलाकर इस परंपरा का आरंभ किया जाता है। वह अपने हाथों से दूध–भात खिलाती है। इस रस्म में पांच कौर खिलाने की मान्यता है। एक सदस्य खिलाए या पांच सदस्य मिलकर खिलाए पांच कौर खिलाया जाना अनिवार्य माना जाता है। दूध–भात खिलाने के बाद मुंह धुलवाया जाता है फिर आंचल से मुंह पोछा जाता है। इसके बाद उसे सुखी दांपत्य जीवन के लिए आशीर्वाद दिया जाता है। एक दृश्य देखिए–

गांव के प्रत्येक घर में वर–वधू को दूध–भात खिलाकर यह परंपरा संपन्न की जाती है। वर–वधू को घर–घर बुलाकर दूध–भात खिलाया जाता है। श्दूध–भातीश खिलाने के लिए गाजे–बाजे के साथ नाचते–कूदते हुए ले जाते हैं। वहां पहुंचकर स्वागत सत्कार किया जाता है। सबसे पहले वर या वधू के साथ आए सदस्यों को पानी दिया जाता है तथा अपने हाथों से दूल्हे के पैर धुलाए जाते हैं। घर के आंगन में या फिर भीतर बिठाया जाता है। घर की सयानी महिला सदस्य अपने हाथों से वर–वधू को दूध–भात खिलाती है। इसके

पश्चात् वहीं पर संगीत और नाच–गाना होता है, फिर वर या वधू को भेंट स्वरूप मुद्रा या अन्य वस्तु देकर उन्हें विदा किया जाता है।

इस परम्पूरा के श्रेष्ठ विधान को देखते हैं तो पाते हैं कि आदिवासी लोक इस परम्प रा का निर्वाह प्रकृत रूप में करता है। परम्पारा निर्वाह में जब वैवाहिक रस्म प्रारंभ हो जाता है तब वर–वधू को न बुलाकर संबंधित परिजन स्वयं आते हैं और उन्हें दूध–भात खिलाते हैं। ऐसा माना जाता है की विवाह के दिन वर या वधू को घर से बाहर जाना अशुभ होता है। यहां भी वही क्रम चलता है। सबसे पहले उनकी माता खिलाती है। इसके पश्चात मामी, चाची तथा अन्य परिजन एक–एक करके इस रस्मा को करते हैं। वर पक्ष की ओर से यह अंतिम रश्म होती है। इसके आगे की रस्मय वधू पक्ष की ओर से की जाती है जो बारात के वहां पहुंचने के बाद होती है।

बारात के पहुंचने के पश्चात् पहले अगवानी होती है, फिर स्वागत–सत्कार होने के बाद जनवासा दिया जाता है। वधू पक्ष की ओर से स्त्रियां वर को श्दूधा–भातीश खिलाने के लिए गाजे–बाजे, गीत–संगीत और नाच–कूद के साथ आती हैं। कहीं जनवासा वाले स्थान में दूधा–भाती की परम्पपरा होती है तो कहीं जनवासा से सवासा दूल्हे को गोद में उठाकर वधू के द्वार तक लेकर जाता है। द्वार पर पहुंचते ही वधू का भाई जो पहले से मंडप के ऊपर पानी लेकर बैठा रहता है, वह दूल्हे के ऊपर पानी की बौछार करता है। जब तक उसे नेंग नहीं देते तब तक वह पानी डालता जाता है। नेग लेने के बाद पानी डालना बंद कर देता है। इस लोक रिवाज के पश्चात द्वारचार होता है फिर आंगन के द्वार पर ही चौंक पूरा जाता है। इसी चौंक पर बिठाकर दूधा–भाती की परम्पारा सम्पान्नआ होती है। यहां पर श्दूधा–भातीश के रूप में बतासे या पापड खिलाया जाता है। सबसे पहले वधू के माता–पिता द्वारा वर को दूध–भात खिलाया जाता है। इसके बाद सगुन स्वरूप गौ, बछिया, बकरी आदि देने का रिवाज होता है। आज के समय में इनके स्थान पर मुद्राएं या अन्य वस्तु देना प्रचलित है। माता–पिता के बाद मामा–मामी, दादा–दादी तथा अन्य सभी सगे संबंधी इस रस्म को बारी–बारी से करते हुए संपन्न करते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं के बीच महिलाओं द्वारा गारी–गीत गाया जाता है। वे गारी के माध्यम से वर पक्ष के सदस्यों को चिढ़ाती हुईं अपनत्व का बोध कराती हैं–

आटो के उपर हवेली बनी है उस पर बंदर बैठा लाला

जैसे दूल्हा जेन खे बैठे हाथ पकड़ खे हिला दओ लाला बंदर ने। आटो के .....

एसो दूल्हा बतेसा खाऊन बैठे हाथ पकड़ खे हिला दओ लाला बंदर ने। आटो के.....

ऐसे दूल्हा खोपड़ा खाऊन बैठे हाथ पकड़ के हिला दओ लाला बंदर ने। आटो के.....

ऐसे दूल्हा पापड़ खाऊन बैठे हाथ पकड़ के हिला दओ लाला बंदर ने। आटो के.....

ऐसे दूल्हा भजिया खाऊन बैठे हाथ पकड़ के हिला दओ लाला बंदर ने।आटो के.....

यहां पर, दूल्हा का नाम संबोधित करती हुई उसे उलाहना देती हैं।

हरे मंडप के नीचे सम्पून्नम दूधा–भाती के बाद वर को जनवासे ( जनवासा वह स्थान होता है जहां पर बारातियों के स्वागत–सत्कार की व्यवस्था की जाती है) में ले जाते हैं। फिर वधू पक्ष की ओर से वधू की माता तथा अन्य महिलाएं मिलकर जनवासे में वर के लिए भोजन लेकर जाती हैं। वे गीत–गारी गाती हुई गाजे–बाजे के साथ जाती हैं। यह रस्मे भी श्दूधा–भातीश का ही एक रूप है जिन्हें हम लोक गीतों के माध्यतम से देख व जान सकते हैं–

आठ सुपारी नौ परसैया बारह है जैवैया।
धीरे–धीरे खा ले दूल्हा नौ है परसैया।
आठ सुपारी नौ परसैया बारह है जैवैया।
धीरे–धीरे खा ले सवासा नौ है परसैया।
आठ सुपारी नौ परसैया बारह है जैवैया।
धीरे–धीरे खा ले समधी नौ है परसैया।
आठ सुपारी नौ परसैया बारह है जैवैया।
धीरे–धीरे खा ले समधन नौ है परसैया।
आठ सुपारी नौ परसैया बारह है जैवैया।
धीरे–धीरे खा ले लग्नों नौ है परसैया।
आठ सुपारी नौ परसैया बारह है जैवैया।

'दूधा–भातीश खिलाने की परम्परा यहीं पर समाप्त नहीं होती है। विवाह संपन्न होने के पश्चात जब सभी रस्मद, रीति–रिवाज पूर्ण हो जाते हैं तब विदाई के पूर्व वर–वधू को एक साथ बैठा कर किया जाता है। हमने देखा कि दूधा–भाती अलग–अलग यानि वर और वधू को अपने–अपने घर में अथवा परम्प रा के किसी क्रम में किया जाता है किन्तुध यह वह घडी होती जब वर–वधू को एक साथ बैठाकर भोजन कराया जाता है जो आदिवासियों की मान्यत परम्पुराओं में श्दूधा–भातीश के अंतर्गत आता है। यह भी देखने को मिलता है कि इस समय वर–वधू के साथ उनके अन्य भी सम्मिलित रहते हैं। वधू पक्ष की महिलाएं वर पक्ष के सदस्यों के साथ हंसी–ठिठोली करती हुए उन्हें सताती हैं तथा स्नेह पूर्ण ढंग से उनको खूब चिढ़ाती हैं। उनके बैठने के स्थान पर पापड़ या सागौन के सूखे पत्ते रख देती थी जिससे बैठते ही उनके टूटने की आवाज आती और उनका उपहास उड़ाया जाता था। अंत में नेग लेने के बाद उनको जाने देती थी। आदिवासी संस्कृऔति में इसे जेवनार गीत भी कहा जाता है। जेवनार गीत के बडे मीठे बोल हैं–

आलू मैथी की भजिया नरम नरम।
दूल्हा खा लइयो भजिया नरम नरम
तेरे नखरे में भर दऊं मसाला गरम गरम
सवासा खा लइयो भजिया नरम नरम।
तेरे नखरे मे भर दऊ मसाला गरम गरम।
समधि खा लइयो भजिया नरम नरम ।
तेरे नखरे में भर दऊ मसाला गरम गरम ।
समधन खा लाइयो भजिया नरम नरम ।
तेरे नखरे में भर दऊ मसाला गरम गरम।
आलू मैथी की भजिया नरम नरम।

इन गीतों के माध्यम से समधी–समधन, दूल्हा तथा अन्य परिजनों को चिढ़ाती हैं जिससे जीवन संबंधों में

अनुराग उत्पोन्नस होता है तथा संबंधों के मिठास की धारा प्रवाहित होती है। ऐसे उल्लांस भरी यह दूधा–भाती की परम्पगरा आदिवासियों के प्रकृत जीवन का परिचायक ठहरती है। परम्पऐरा का ऐसा वैशिष्ट्य व अनूठा रूप सहज और जन–भावनाओं के अनुरूप परिलक्षित होता है।

**निष्कर्ष**

आदिवासियों की आदिम परपम्परा में दूधा–भाती का विशिष्ट स्थान है । यह परम्पठरा शादी–विवाह के संबंध होने के बाद रस्म तय होते हैं। यह श्दूधा –भाती श्का रश्म आदिवासी जीवन का वैशिष्ट्य तो है ही संस्कृ ति की अकाट्य परंपरा भी है। इसमें व्यक्ति को व्यक्ति से, परिवार को परिवार से, समाज को समाज से और मानव को मानव से जोड़ने की प्रतिबद्धता निहित होती है। इससे आदिवासी जीवन का सहज और प्रकृत तथा उत्तम संस्कारों व चरित्रों की परिकल्पना परिलक्षित होती है। इसलिए दूधा–परम्प रा आदिवासियों की धरोहर बनी हुई है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *डॉ.सत्येलन्द्रि रू लोक साहित्यि विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी प्रा.लि. आगरा, संस्कोरण प्रथम १९६२*
2. *दिनेश्वंर प्रसाद रू लोक साहित्य और संस्कृति, जयभारती प्रकाशन ४४७ पीली कोठी, नयी बस्ती कीडगंज, इलाहाबाद, २११००३, संस्करण द्वितीय १९९९*
3. *ए.के. रामानुजन (अनुवादक दृ कैलाश कबीर) रू भारत की लोक कथाएं, नेशनल बुक टस्ट ऑफ इंडिया नेहरू भवन, ५ इंस्टीतट्यूशनल एरिया फेज–२ वसंत कुंज नई दिल्लीं दृ ११००७०*
4. *डॉ. मनोहर शर्मा रू लोक साहित्य की सांस्कृ तिक परम्प रा, रोशन लाल जैन एंड संस चौन सुखदास मार्ग, जयपुर–३*
5. *डॉ. गोविन्दर चातक रू भारतीय लोक संस्कसति का संदर्भ रू मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन, २३९४७६२, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली दृ ११०००२*
6. *गूगल सर्च दिनांक ०५९०३९२०२१*